IIJIF
Indexed 1675
GENERAL IMPACTFACTOR
INTERNATIONAL PEER Reviewed JOURNAL
ISSUE-16 VOL-1 IMPACT - 2.2042 ISSN-2454-6283 April-June -2019

शोध-ऋतु

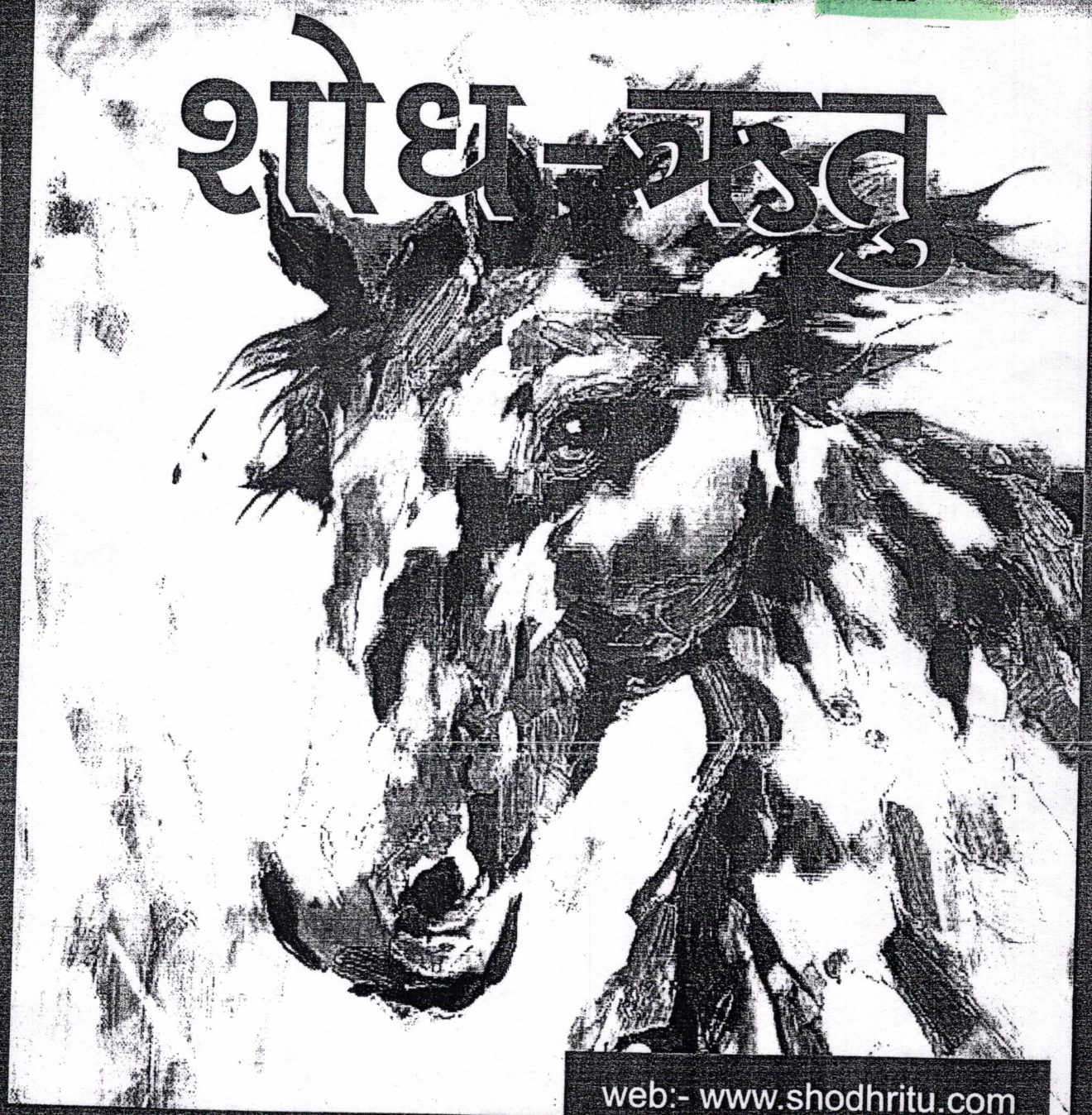

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

शोध - ऋतु Shodh-Rityu

तिमाही शोध-पत्रिका

PEER Reviewed JOURNAL

ISSUE-16 VOLUME-1 IMPACT FACTOR-2.2042 ISSN-2454-6283 अप्रैल-जून,2019

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

९४०५३८४६७२

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,

मुंबई

पत्राचार हेतु पता->

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,हनुमान गढ़ कमान के सामने,नांदेड-४३१६०५

अ नु क्र म णि का

1.एकात्म मानव दर्शन एवं भारतीय संस्कृति– डॉ.अभिमन्यु प्रताप सिंह–05

2.भारत में गठबन्धन सरकारों का अस्तित्व–हिमांशु कुमार–07

3.'नगाड़े की तरह बजते शब्द'-आदिवासी नारी-जीवन का खुला दस्तावेज़- डॉ. सी.एस.सुचित-10

4.सल्तनत कालीन शासकः राजत्व का सिद्धान्त –डॉ0 कमल किशोर–14

5. भारत में महिला सशक्तिकरण : कल्पना अथवा यथार्थ– पूजा सिंह–18

6. ममता कालिया जी के उपन्यासः बेघर– डॉ के सोनिया–21

7. डॉ. अम्बेडकर द्वारा मनुस्मृति का दहन क्यों ?– डॉ. विनी शर्मा–26

8. नरेश मेहता के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक चिन्तन– डा0 रश्मि सूद–31

9. प्रेमचन्दयुगीन कहानी में मध्यवर्गीय चेतना– डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव–35

10. हिंदी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न– डॉ.एम.डी.इंगोले–39

11. हिन्दी व्यंग्य साहित्य के विविध सोपान– डॉ0 ज्योति शुक्ला–43

12. कर्मयोगी–नरेन्द्र मोदी– डा0 जया मिश्रा-46

15. An Empirical study on Magnitude and Distribution of Child Labour in India- DR. Jyotika Awasthi-49

14. Music therapy- An approach to define its various perspectives- Bindu J.R-56

15. A Critical Views on Indian Universities (Concept of Dr. Radhakrishnan)- SHILPA B HOSAMANI-60

16. रामवृक्ष बेनीपुरी : कविताओं में निहित स्वस्थ समाज की परिकल्पना- डॉ. बसवराज के. बारकेर-64

17. स्त्री और परिवार विमर्श- सौम्या बी-69

18.अपराध एवं राजनीतिक अपराधीकरण- डॉ0 राम कुमार त्रिपाठी-70

१०.हिंदी उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न

डॉ.एम.डी.इंगोले
(हिंदी विभागाध्यक्ष तथा शोधनिर्देशक)
कला,वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय,गंगाखेड

स्त्री का अर्थ है–औरत, पत्नी,महिला,जोरू,नार या नारी, नौकरानी, मजदूरनी आदि। औरत का अर्थ है– औरों के कार्यों में या सेवा में रत रहनेवाली। पत्नी का अर्थ है, किसी पुरूश की बंदीनी या बंधी हुई। महिला का अर्थ है भले घर की स्त्री। नार या नारी याने जिसमें नारीत्व भाव है, उसे नाली या नाडी भी कहा जाता है। स्त्री का अर्थ है– जिसमें स्त्रीत्व भाव है। अर्थात् वह मादा है, जो मनुश्य जाति के दो भेदों में से एक है, जिसका काम गर्भधारण करके संतान उत्पन्न करना। यह प्रकृति की उसके लिए सब से बडी देन है। षास्त्रों के अनुसार वह सुंदर,नाजुक, कोमल,अबला,कमजोर,दूसरों पर आश्रित,निर्भर रहती हैं। वह पतिवृत्ता होती हैं, सातों जन्मों तक एक ही पुरूश से बंधी होती है। उसके लिए पति ही सर्वस्व या परमेष्वर होता है, चाहे वह चरित्र से कैसा भी हो। स्त्री वह धन है, जिस पर मैके या ससुरालवालों का पूरा–पूरा अधिकार होता हैं।

स्त्रीवादी साहित्य अर्थात् स्त्रियों का ऐसा साहित्य, जिसमें स्त्री–पुरूश के परस्पर पारिवारिक,सामाजिक आंतरिक संबंधों का विश्लेशण हैं। षास्त्रों या धार्मिक ग्रंथों–वेद,व्याकरण,ज्योतिश,छंद,धर्मषास्त्र,पुराण आदि द्वारा जनसाधारण के नियमों के अनुसार स्त्री को षूद्रों से भी अतिषूद्र माना गया, गुलाम माना गया। इन परंपरावादी मान्यताओं के विरूध्द स्त्री साहित्य अपनी अस्मिता के लिए उठ खडा हुआ एक स्त्रीवादी आंदोलन हैं। स्त्री के प्रति हीनता के पुरूशवादी द्रश्टिकोण की भारतीय परंपरावादी,वर्णाश्रम, जातिवादी समाज व्यवस्था में इसकी जडे हैं। वेदों,पुराणों और स्मृति ग्रंथों के अनुसार षूद्रों से भी अतिषूद्र स्त्री को माना गया था। 'मनुस्मृति' ग्रंथ में लिखा है–

" बाल्य पितृवंषे तिश्ठेपाणि ग्रहस्य यौवने।
पत्राणां भर्तरि प्रेते न भेजे स्त्री स्वतंत्राम।।"[1]

अर्थात् स्त्री को बचपन में पिता,यौवनावस्था में पति, विधवावस्था में या वृध्दावस्था में पुत्रों के अधिन रहना चाहिए। स्मृति काल में स्त्री को भोग की वस्तु माना गया। उसे चार दीवारों में बंदिस्त कर दिया गया। घर,परिवार,बच्चों की देखभाल, रसोई,साफ सफाई आदि कार्य सौंपकर उसकी विवेक चेतना षक्ति को पंगु बना दिया गया था। बावजूद इसके वैदिक काल की अपाला,घोशा,वाक्,सूर्या,सावित्री आदि ऋशिकाएँ, उपनिशद काल की गार्गी, मैत्रेय विदुशियाँ तथा बुध्द कालीन महाप्रजापति गौतमी, यषोधरा, अम्रपाली, प्रकृति, विषाखा,मल्लिका,किसा–गौतमी आदि की भारतीय इतिहास में महत्ता है।

मध्यकालीन भक्ति साहित्य में संत मीराबाई सभी सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर अपनी आत्मानुभूति का कृश्ण भक्ति साहित्य लिखती है। रीतिकाल में स्त्रीवादी साहित्य का लवलेष मात्र भी नहीं है। यह काल तो नैतिकता की दृश्टि से घोर अधःपतन का समय है। यहाँ स्त्री को श्रृंगार,विलास या भोग की वस्तु मात्र माना गया। कहा ये जाता है कि, घनानंद की पत्नी 'सुजान' एक अच्छी कवयित्री थी। जिसकी कोई रचना नहीं मिली। उसके सामने बैठकर घनानंद कविताएँ लिखते थे।

आधुनिक काल के आरंभ में आहिल्याबाई होलकर,रजिया बेगम,चाँद बीबी, लक्ष्मीबाई षासक तथा विरांगणाएँ हुई हैं। सामान्य स्त्री की स्थिति मात्र सोचनीय थी। स्वतंत्रतापूर्व जागरण काल में स्थिति थोडी–सी बदलती नजर आती है। इस दौर में

समाज सुधार के कई आंदोलन चले। विषेशतः क्रांतिरत्न ज्योतिबा और क्रांति ज्योति सावित्री माता फूले दम्पति ने 1 जनवरी 1848 ई.में पुना में भीडे बाडे में लडकियों तथा महिलाओं के लिए पहली बार स्कूल खोला। इसलिए कवि लिखते हैं –

''यहॉ जागृत हुआ
पहली बार स्त्रीत्व का हुंकार
यहॉ मिला स्त्रीत्व को अधिकार
फूटी कोंपल स्त्री के अस्तित्व को
पर ही निकल आये जैसे
स्त्री मनुश्य बनकर मानवता को।''[2]

इस काल में सामाजिक सुधार आंदोलनों द्वारा सती प्रथा, बालविवाह,विधवा विवाह,दहेज प्रथा,अनमोल ब्याह, अंधविष्वास, अस्पृष्यता, छूआ–छूत, भाईचारा,मानवता आदि का प्रचार प्रसार जोरों पर हुआ। आधुनिक काल में भारतेंदु तथा द्विवेदी काल में कोई महिला लेखिका नहीं उभरी। छायावाद की महादेवी वर्मा अपनी अनुभूति एवं अनुभवों की को साहित्यिक रचनाओं में उभारती हैं। यहॉ तक कोई स्त्री साहित्य की परंपरा नहीं मिलती।

स्वातंत्र्योत्तर काल में भारतीय संविधान द्वारा स्त्री को मौलिक अधिकार प्रदान किए गये। उल्लेखनीय बात है कि,हिंदू महिलाओं के हित का 'हिंदू कोड बील' नेहरूजी तथा उनकी सरकार में षामिल सहयोगियों ने नामंजूर कर दिया। परिणाम स्वरूप डॉ.आंबेडकरजी ने कानून मंत्री पद से इस्तिफा दिया। आगे चलकर बडे सायास से यह बील मंजूर करवाया। विस्मय की बात है कि, आज कोई भी स्त्री संगठन इस बात को स्पश्ट नहीं करता।

साठोत्तर काल में संविधान द्वारा मिले अधिकारों महिला जागृति, षिक्षा के प्रचार–प्रसार तथा विष्व संपर्क के कारण कई सारी लेखिकाऍ उभरकर सामने आती हैं। एक सषक्त स्त्री–साहित्य धारा–सी प्रवाहित होती हुई नजर आती है। वे पूरजोर तरिके से स्त्री अस्तित्व,स्वाभिमान,स्वतंत्रता,न्याय तथा अपनी अस्मिता के प्रष्नों को अपनी साहित्यिक रचनाओं में चिन्हांकित करती हैं। इस काल में हिंदी में चंद्रकिरण सोनरेक्सा, उशा प्रियंवदा,मालती जोषी, मन्नु भंडारी,सुधा अरोडा, कृश्णा अग्निहोत्री,मंजुल भगत, मृदुला गर्ग,प्रभा खेतान,चित्रा मुदगल,षषी प्रभा षास्त्री,षिवानी,रजनी पनीकर,कुसुम अंसल,मीना चौहान,बाला दूबे,नासिरा षर्मा, राजी सेठ,सूर्यबाला,सुश्माबेदी,दीप्ति खांडेलवाल, मणिका मोहिनी, मृणाल पाण्डे, ममता कालिया,कृश्णा सोबती,मैत्रेय पुश्पा,अल्का सरावंगी,सुनिता जैन, मधु कांकरिया आदि लेखिकाओं ने स्त्री अस्मिता के प्रष्नों को खुलकर सामने लाया। इन लेखिकाओंने कहीं दबी जुबान से तो कहीं खुले तौर पर पुरूश प्रधान संस्कृति को चुनौती दी।

स्त्री स्वाभिमान,अस्तित्व के लिए विद्रोह,आक्रोष एवं संघर्श तथा अपने प्रष्नों की प्रस्तुती स्त्री साहित्य करता हैं। प्रभा खेतान 'पीली आंधी' उपन्यास में बाल–विवाह,घूँघट, अनमेल ब्याह,विधवा विवाह तथा तलाक आदि स्त्री समस्याओं को निरूपित करती हैं। साथ ही वह विवाह संस्था की निरर्थकता को स्पश्ट करती है। नासिरा षर्मा 'षाल्मली' उपन्यास में नायिका षाल्मली पर्यावरण विभाग में डायरेक्टर होने पर भी उसका पति नरेष उसे कहता है–

''तुम संसार से निराली थोडे हो? भाभी,चाची,मामी
औरों की तरह औरत ही हो न?''[3]

स्त्री–पुरूश के बिगडे आपसी संबंध में स्वअस्तित्व की लडाई में नौकरी पेषा करनेवाली स्त्री को दफ्तर और घर में दोनों जगह संघर्श करना पड रह है। भूमंडलीकरण के दौर में फैषन और पारिवारिक मूल्य में विघटन स्त्री की स्वच्छंदता, उत्छृंखलता के कारण पति–पत्नी में असामंजस्य दिखाई देता हैं। बाजारवादी भौतिक युग में मल्टिनेषनल कंपनियॉ अपने उत्पाद के विज्ञापन के लिए अविवाहीत,सुंदर,सुडौल,मॉडेल के रूप में लडकियों को प्रधानता देती हैं। लडकियॉ षादी करके घर बसाती है, बच्चों को जनम देती हैं, तो उनकी सुंदरता में गिरावट आती है। यही बात ममता

कालिया के 'दौड' उपन्यास में दर्षाया है। राजीसेठ के 'निश्कवच' उपन्यास में मध्यवर्गीय स्त्री अपना सौंदर्य न बिगडे इसलिए बच्चों को दूध नहीं पिलाती हैं। स्त्री अपनी आर्थिक आत्मनिर्भरता चाहती है। पढी–लिखि नारी में कल्पकता, नई उम्मीद, दृढता, साहस, आत्मविष्वास, एकाग्रता,निर्भयता,सहायता,नेतृत्व गुण,नयी वैज्ञानिक सोंच आदि गुण विषेशताएँ दिखाई देती हैं। इसलिए वह अन्याय,अत्याचार,षोशण की समस्याओं,कठिणाईयो, बुराइयों से लडने का साहस आजकी स्त्री में हैं। प्रभाखेतान का 'छीन्नमस्ता' उपन्यास का पात्र 'विजय' अपनी नौ बरस की बहन का बलात्कार करता है। उपन्यास में पुरूशी अहंकार स्त्री को केवल भोग्या के रूप में देखता है।

चित्रा मुदगल का उपन्यास 'आवां' यह संकेत करता है कि, स्त्री को देह से ऊपर उठकर देखना चाहिए। मैत्रेयी पुश्पा का 'इदन्नमम' उपन्यास नौकरषाही में फैले भ्रश्टाचार का विरोध करनेवाली नारी के रूप में 'मंदा' का चित्रण किया गया है। खून,बलात्कार,स्त्री को जिंदा जलाना,आत्महत्या के लिए मजबूर करना, इलेक्ट्रिक षॉक देना आदि पुरूशी तथा पारिवारिक हिंसा का षिकार आज की नारी होती हुई दिखाई देती हैं। बावजूद इन सबके स्त्री में प्रेम,श्रध्दा,निश्ठा,सच्चाई, प्रामाणिकता,समर्पण की भावनाएँ आज भी जागृत हैं। महानगरीय परिवेष में तनाव,द्वंद्व,कुंठा,अकेलापन की समस्याएँ स्त्रियों को सताती हैं। कृश्णा सोबती का उपन्यास 'ऐ लडकी' की 'अम्मू' अकेलेपन को झेलते हुए ससून से कहती है, ''बेटा, बेटियॉ, नाती–नातिन,पुत्र–पौत्र आदि के रूप में मेरा सब परिवार सजा हुआ है, फ़िर भी मैं अकेली हूँ।''[4] अलका सरावगी का उपन्यास 'कलीकथा : वाया बाईपास' भी भाभी के अकेलेपन की त्रासदी को दर्षाता है।

दाम्पत्य जीवन में तनाव तथा पति–पत्नी संबंध विछेद की त्रासदी का असर बच्चों पर कैसे होता है, इस बात को मन्नु भंडारी के उपन्यास 'आपका बंटी' में देखा जा सकता है। मैत्रेयी पुश्पा का 'चाक' की 'सारंग' 'झूला नह' की 'षीलो', कृश्णा सोबती के 'दिलोदानिष' की 'महकबानो' मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' की 'नभिता' तनाव एवं संबंध विच्छेद तथा अकेलेपन की समस्याओं को झेलती नजर आती हैं। स्त्री अस्मिता, स्त्री मुक्ति का प्रष्न,गरीबी, वेष्या समस्या,विधवा समस्या, तलाकषुदा स्त्री–समस्या, निःसंतान स्त्री की समस्या, वृध्दा समस्या, स्त्री–भ्रूण हत्या आदि समस्याओं को लेखिकाओं ने अपने साहित्य का लक्ष्य बनाया। सेक्स संबंध यह भी एक समस्या है। यौन सुचिता या नैतिकता के सारे सवाल स्त्री के लिए ही क्यों? पुरूश के लिए कोई नियम लागु नहीं है, ऐसा क्यों? स्त्री के प्रति कोषकारों की मानसिकता का भी बडा प्रष्न है। कई अपषब्दों का प्रयोग स्त्री के लिए किया है। पुरूश प्रधान समाज में स्त्री की यौनिकता संबंधी कई गालियों का प्रयोग धडल्ले से किया जाता है। यह रूप होली के अवसर पर खुलकर हमारे सामने आता है।

मृदुला गर्ग के उपन्यास 'चितकोबरा' में कपडे की तरह संबंध बदल देने की ओर संकेत किया गया है। वर्तमान में स्त्रियों पर बढते हमले स्त्री मुक्ति के सपनों के सम्मुख बडी चुनौती है। पारिवारिक महिला उत्पीडन घरेलु हिंसा, बलात्कार में पडोसी, रिष्तेदार,बाप–भाई,मामा,चाचा आदि ही पहचान के लोग पाये जाते हैं। सामूहिक बलात्कार की भी एक बडी समस्या है। लडकियों का क्रख–विक्रय, एक पत्नी के होते हुए दूसरी स्त्री रखना,किराये की कौख जैसी समस्याएँ स्त्री साहित्य के सामने मुँह बाये खडी हैं। आज बेरोजगारी एवं स्त्री के नौकरी पेषा होना भी एक समस्या है। एक समय में जहॉ 'हाऊस वाईफ' पध्दति थी उसकी जगह 'हाऊस हाजबंड' ले रहा हैं।

षुभा वर्मा के उपन्यास 'कोलाज' तथा 'उसका हासिल' उपन्यासों में नारी की देहिक स्वतंत्रता पर बल दिया हैं। समकालीन समय में स्वच्छंद वृत्ति,विवाह संस्था का अस्वीकार,उन्मुक्त उपभोग की ओर स्त्री का अधिक रूझान हैं। निम्न मध्यवर्गीय नौकरी पेषा करनेवाली अकेली स्त्री की कमाई पर पूरा परिवार पलता हैं। यहॉ तक कि उसे दूध पिता बच्चा होने पर भी नमक–पानी के साथ रोटी खानी पडती है। अर्थाभाव में लडकियों की षादियॉ नहीं हो पा रही हैं। बाल–विवाह आज भी

धडल्ले से हो रहे हैं। उत्पीडित महिलाओं को पुलिस व्यवस्था से सहयोग नहीं मिलता। महिला आयोग भी क्षीण है। वहॉ तक महिलाएँ पहुँच ही नहीं पाती। नारी को संदेह की दृश्टि से देखा जाता है। उस पर अविष्वास किया जाता हैं। गुनहगारों को छूट दी जाती है। न्याय व्यवस्था में विलंब हैं। लडका–लडकी प्रेम को जातीय परंपरावादी ढॅग से देखा जाता है। स्त्री–पुरूश लिंगभेद के कारण स्त्री–भ्रूण हत्या की जाती है। छेडछाड एकतर्फा प्रेम,बेरोजगारी,महॅगाई,षहरों की ओर पलायन, दिषाहीनता, भटकाव, मजबूरी, नोकरषाही, तानाषाही, उपभोक्तावाद, बाजारवाद आदि कुछ ऐसे प्रष्न है,जो स्त्री अस्मिता के लिए बाधाएँ उत्पन्न करती हैं। इंटरनेट का दुरूपयोग यह भी एक प्रष्न है। षादीका वादा करके भगा लेजाना, दुश्कर्म करना भी एक समस्या है।

स्त्री साहित्य की लेखिकाएँ रचनाधर्मिता निभा रही है। वस्तुतः दलित विमर्ष, स्त्री विमर्ष और आदिवासी विमर्ष समूची मानवता का आकांक्षी हैं। यह साहित्य मानव समाज में जन तांत्रिक मूल्यों समता,बंधुता,न्याय एवं विष्वमानवता के निर्माण की प्रेरणा देता हैं। समाज में जाति, वर्ण, लिंग, रंग, वर्ग या आयु के आधार पर मनुश्य–मनुश्य के बीच भेद–भाव को मिटाता हैं। स्त्री को षुद्र से भी अतिषुद्र माना गया था। स्त्री को दासी,गुलाम माना गया था। सिंदूर, मंगलसुत्र, चुडिया,पायल, कंगन,झुमके,बीचुएँ ये सब वर्ण व्यवस्था की ही देन तथा स्त्री पुरूश की अधिनता के प्रतीक है। स्त्री को आज भी अबला,कमजोर,गुलाम माना जाता हैं। वैसे ही संस्कार किये जाते हैं। स्त्री पुरूश असमानता,बाल विवाह,दहेज प्रथा,जातिप्रथा, जाति बिरादरी में ही विवाह करना। मॉ–बेटी, सास–बहु, भाई–बहन, लडका–लडकी में भेद करना, प्रेम विवाह को मान्यता न देना, महिला उत्पीडन कानून अमल में कसूर, पोशाख संबंधी प्रतिबंध, आचार–व्यवहार में प्रतिबंध, अषिक्षा, अंधविष्वास, आत्मसुरक्षा के प्रषिक्षण का अभाव,नैतिक मूल्य षिक्षा का अभाव, स्त्री संगठन का अभाव, स्त्री ही स्त्री के पारिवारिक उत्पीडन का कारण, स्त्री के प्रति पुरूशी दृश्टीकोन, स्त्री–षोशण, पति–पत्नी वैवाहिक संबंध, सेक्स समस्या,अनमेल ब्याह आदि कुछ प्रष्न स्त्री साहित्य उद्घाटित करता हैं।

मूलतः ही प्रकृति ने स्त्री–पुरूश को परस्पर पुरक बनाया है। कुछ स्त्रीवादी लेखिकाएँ पुरूश से अलग होकर स्वतंत्र अस्तित्व एवं जीवन या पनकी परिकल्पना करती हैं, यह भी अतिवाद है। साहचर्य एवं सामंजस्य से ही स्त्री–पुरूश सहजीवन आगे बढना चाहिए। पुरूशों को भी चाहिए कि स्त्री को स्वतंत्रता दे। स्वतंत्रता का मतलब स्वैराचार भी नहीं हैं। पुरूशों को अहंवाद त्यागना चाहिए। स्त्री सम्मान करना चाहिए। वह भी इंसान है, उसे भी भाव–भावनाएँ हैं, उसका भी मन हैं, षरीर है, उसका आदर करना चाहिए। स्त्री–पुरूश दोनों द्वारा स्त्रीभ्रूण हत्या को बढावा नहीं देना चाहिए। "बेटी नहीं तो बहु कहॉ से लाओगे?, बहु ही नहीं तो संतान कहॉ से पाओगे?"

स्त्री साहित्य अपनी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति से पूर्णतः प्रामाणिक हैं। इस बात को नकारा नहीं जा सकता। दलित तथा स्त्री साहित्य विष्वमानव षोशण मुक्ति या स्वतंत्रता का आकांक्षी साहित्य है, जिसमें स्त्री पुरूश समानता,आचार–विचार एवं व्यवहार तथा निर्णय प्रक्रिया में स्त्री–सहभाग अनिवार्य हैं। विष्व के कुछ देषों में लडकी पढना चाहे तो उसे गोली दाग दी जाती है। हमारे भारत में लडकी पढना चाहे तो उसे स्कॉलरषिप मिलती है। ये सब डॉ.आंबेडकरजी के संविधान का करिष्मा है। नारी अबला नहीं तो वह पुरूश से भी सबल हैं, यह विज्ञान ने भी सिध्द किया है। इसे पुरूश भी स्वीकार करे। सूरजपाल चौहान का मानना है कि, साहित्य समाज का दर्पण नहीं बल्कि दीपक है। अंत में हम यही कह सकते हैं; और न कोई लिखे, नारी तेरी नई कहानी ।

खुद की कलम से खुद ही लिखे, अपनी नयी जुबानी ।।

संदर्भ संकेत :–

1. मनुस्मृति – डॉ.चमलाल गौतम
2. म.फूले समग्र वाडमय
3. शाल्मली–नासिरा षर्मा
4. ऐ लडकी–कृष्णा सोबती
5. नालंदा विषाल शब्द सागर